राजस्थान हॉलमार्किंग वैलफेयर एसोसिएशन द्वारा माननीय लोक सभा अध्यक्ष के सम्मान समारोह एवं अभिनन्दन कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का संबोधन

राजस्थान हॉलमार्किंग एसोसिएशन, जो पिछले कई बार से मुझसे दिल्ली में मिल रहे थे। देश भर के अलग-अलग क्षेत्रों के कई लोग, ज्वैलर्स एसोसिएशन के लोग, हॉलमार्किंग के लोग समय-समय पर मुझसे मिलते रहते हैं। राजस्थान का जयपुर आभूषण, शिल्पकला में एक अद्भुत स्थान पूरे विश्व में बनाता है।

राजस्थान के हर गाँव के अंदर, हर ढाणी के अंदर आज भी हमारे हाथ से काम करने वाले लोग हैं। अगर स्वर्ण आभूषणों को हाथ के माध्यम से नई लेटेस्ट डिजाइन से बनाने की अद्भुत कला किसी के अंदर है तो वह हिन्दुस्तान के अंदर है।

कभी कोई सोच भी नहीं सकता, चाहे सोना हो, चाहे चाँदी हो, उसने किस तरीके से सोने, चाँदी को अपनी हस्तकला, अपनी शिल्पकला, अपनी सोच, चिंतन, ज्ञान के माध्यम से और विशेष रूप से मैं देखता हूँ कि उसमें विरासत भी नजर आती है और आधुनिकता भी नजर आती है। ऐसी कला, संस्कृति और शिल्पकला हमारे पास है।

राजस्थान के जयपुर के हीरे का काम हो, ज्वैलरी की शिल्पकला हो, देश और दुनिया के अंदर, बड़े से बड़े विकसित देशों के अंदर आज भी जयपुर के ज्वैलर्स ने अपना स्थान बना रखा है। कुछ कोविड का दौर आया

था, उस समय कुछ मार्केट में गिरावट आयी, अंतर्राष्ट्रीय मार्केट में भी, विश्व के सभी मार्केट्स में गिरावट आयी थी।

लेकिन आज मैं कह सकता हूँ, जब मैं दुनिया के देशों में जाता हूँ तो देखता हूँ कि जयपुर के ज्वैलर्स और राजस्थान के ज्वैलर्स, चाहे हीरे का काम हो, चाहे ज्वैलरी का काम हो, चाहे नगीने का काम हो, उनका एक अपना स्थान है।

इसके साथ-साथ राजस्थान के छोटे-छोटे गाँवों के अंदर भी, समय पलटा है, मुझे पता है कि मशीन के काम का भी बहुत तेजी से विस्तार हुआ है, लेकिन जो हस्तशिल्प कला है, चाहे कितनी भी आधुनिक मशीनें हों, मशीन के बने हुए और हाथ के बने हुए में कहीं न कहीं अंतर नजर आता है।

जो हाथ का काम होता है, वह बहुत बारीकी से होता है, मशीनें भी नई टेक्नोलॉजी की आयी हैं, लेकिन हमारी कोशिश यह भी होनी चाहिए कि हमारी जो असली कला हस्तशिल्प कला है, वह कहीं गौण न हो जाए।

उसकी भी हमें चिंता करनी चाहिए, नहीं तो बहुत बड़ी संख्या में हमारे हाथ से ज्वैलरी बनाने वाले लोग बेरोजगार हो जाएंगे। उसका भी मार्केट बना रहे, यह सब आपकी जिम्मेदारी है, क्योंकि आप दोनों काम करते हैं, खुद भी बनाते हैं और खुद बनाकर बेचने का काम भी करते हैं। इसलिए मार्केट में किस तरीके का सामान ग्राहकों को, क्योंकि देखिए एक बहुत बड़ा विश्वास होता है।

वर्षों से ज्वैलर्स में जो विश्वास रखता है, ग्राहक उसी के पास जाता है। यह हर जगह का ट्रेंड होता है। गांवों में तो विशेष रूप से पीढ़ियों दर पीढ़ी

यदि कोई ज्वैलर है, तो वहीं जाकर ग्राहक अपनी ज्वैलरी बनाएगा और जो पुरानी ज्वैलरी है, उसे देकर नई ज्वैलरी लेगा।

यह एक विश्वास का रिश्ता है। आपका और ग्राहक का बहुत गहरा विश्वास का रिश्ता होता है। मुझे खुशी है कि इस विश्वास के रिश्ते को आपने कायम किया है। यह बात सही है कि बदलती परिस्थितियों में कुछ लोगों ने ऐसे काम किए हैं, कुछ ऐसे मौके आए हैं और कुछ व्यापारी भी ऐसे निकले हैं, जिनके कारण पूरी इंडस्ट्री, पूरे व्यापार कहीं न कहीं प्रश्नचिह्न लगा है लेकिन फिर भी लोगों का विश्वास बना हुआ है।

अब किसी पेड़ में चार आम कच्चे होने से यह नहीं कहा जा सकता है कि पूरा पेड़ ही खराब हो गया है। बदलती परिस्थिति में मौसम भी बदल रहा है तो फल भी बदल जाते हैं।

समाज में कुछ नैतिकता में कमी आई है, लेकिन फिर भी आज भी लोगों का विश्वास बना हुआ है और यह विश्वास आप दोनों के बीच का है। सरकार ने और सुगमता लाने के लिए हॉल मार्किंग की कार्य योजना बनाई और भारतीय मानक ब्यूरो के स्टैंडर्ड के अनुसार आभूषण बिके, ट्रेड मार्क हो ताकि एक व्यक्ति एक स्थान से लेकर दूसरे स्थान पर यदि अपनी ज्वैलरी को बेचे तो ट्रेडमार्क के कारण उसे बेचने में कोई दिक्कत न आए।

लेकिन योजना बनाते समय कई चीजों की विसंगतियां रह गई थीं, जिनके बारे में अलग-अलग समय में मुझसे अलग-अलग शिष्ट मंडल मिले थे। मैंने सरकार को अवगत कराया था और सरकार ने भी उसी लचीलेपन से धीरे-धीरे जब तक पूर्णतया लोगों के हॉल मार्किंग का लोगो डेवलप न हो जाए, तब तक उन्होंने भी अवधि बढ़ाने का काम किया है।

हमारे जितेन्द्र सोनी जी कई बार परेशानियां लेकर आए, कुछ इंडस्ट्रीज एक्ट की परेशानी थी, कुछ बाजार की परेशानी थी। कानून के अंदर चाहते थे कि इंडस्ट्रीज में हॉल मार्किंग सेंटर हो, यह संभव नहीं हुआ, क्योंकि आभूषण बनाने वाला, आभूषण बेचने वाला बाजार एक बहुत सिलेक्ट बाजार होता है, बहुत निकट बाजार होता है। कभी भी हॉल मार्किंग वाला इंडस्ट्री एरिया में जाए, मार्केट में बेचने वाला, बनाने वाला और दूर हो, तो यह प्रेक्टिकल संभव नहीं था।

इससे कोई पॉल्यूशन होने वाला भी नहीं था इसलिए प्रयास करने के बाद बेहतर परिणाम आए हैं। अब जहां पर ज्वैलरी बनती है और जहां बेची जाती है, उनके बीच बाजार के अंदर भी हॉल मार्किंग सेंटर्स खुलेंगे। कोई भी परेशानी आए, कोई भी दिक्कत आए, मैं आपके साथ हूं।

कभी भी राजस्थान में किसी भी तरह की, मुझे ज्ञापन भी दिया है, जल्दी मुझसे आकर मिलेंगे तो मैं चीजों को समझूंगा। आपकी कोई भी परेशानी हो, आप मुझसे आकर मिलें। मुझे बताएं, तो परेशानियों के समाधान में कहीं न कहीं जो रुकावट आ रही है, उस परेशानी का समाधान बातचीत से, संवाद से, चर्चा से करेंगे। इससे हर समस्या का समाधान निकलता है।

देश की लोकतांत्रिक प्रणाली को मानने वाले लोग हैं, इसलिए यदि ब्यूरोक्रेसी सिस्टम में कोई दिक्कत आ रही है, कोई परेशानी आ रही है और कानून बनाते समय, रूल्स बनाते समय यदि कुछ ऐसे रूल्स बन गए, जिससे कि व्यापारियों को परेशानी आ रही है, तो व्यापारियों की परेशानी को दूर करने की जिम्मेदारी हमारी है।

हम चाहते हैं कि जितना व्यापार समृद्ध होगा, उतना ही देश समृद्धि और खुशहाली की ओर बढ़ेगा। आने वाले समय में हम अपने इंडस्ट्री सेक्टर से, आभूषण सेक्टर से जितना अच्छा एक्सपोर्ट करेंगे, उतनी ही ज्यादा हमारी रेवेन्यू आएगी।

इसलिए इनकी परेशानियों, कठिनाइयों को जितना सरल और सुगम हो सके, उतना सरल और सुगम बनाना सरकार की जिम्मेदारी बनती है। किसी भी तरह की परेशानी आए तो आप मुझसे मिलें। मैं कोशिश करूंगा कि आपकी हर समस्या का समाधान हो।